अमृत बाणी

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

* * * * *

. . . . . ""उह परमात्मा जिस ने जदों वी संसार विच्च नवां मार्ग लाया ए, किसे अवतार पैगम्बर गुरू नूं भेजिया ए, उहनूं पिछली कथा कहाणी नहीं उहनूं कही। पिछले ग्रन्थां शास्त्रां नूं पढ़न वास्ते नहीं उहनूं किहा। उह जदों आया, उह नवां संदेश नवां फ़रमाण नवां नाम नवां कलमा भेजिआ है और उस नूं संसार अंदर प्रसिद्ध कीता है।""
. . . . . (सतिगुरां दुआरा कीते अरथां चों)

* * * * *

नारद कहे भगतो सुण लउ हुक्मनामा, ते गल्लां नवीआं नवीआं जणाईआ। एहनूं बिना कलम तों लिखया श्री भगवाना, बिना कागज़ तों परवाना दिता फड़ाईआ। एहदे उत्ते तक्क लउ विष्न ब्रह्मा शिव ते सीता रामा, ते राधा कृष्न बैठे झुगीआं पाईआ। पैगम्बर तक्को करदे सलामा, सजद्यां विच्च सीस झुकाईआ। सतिनाम दा सुणो नामा, नाम निधाना रिहा दृढ़ाईआ। गोबिन्द दा वेखो निशाना, जो अणयाला तीर चलाईआ। फेर तक्क लउ अज दा दिन ते की कहन्दा जमाना, जिमी असमाना दोवें वेख वखाईआ। किसे दे अंदरों प्रभू दे नाम दा निकलदा नहीं तराना, तुरीआ तों परे प्रभ दा दरस कोई ना पाईआ। रसना जिह्वा ते बत्ती दन्द जगत दा बणया गाणा, ढोले गा गा झट्ट लंघाईआ। ना किसे नूं राम मिले ते ना किसे नूं मिले काहना, सनमुख बहा के सतिगुर दा दर्शन वेखण कोई ना पाईआ। पता नहीं सतिगुरू केहड़े घर विच्च करे विशरामा, सुखआसण आपणा डेरा लाईआ। जगिआसू धरती उत्ते कहण तूं मेरा कृष्न तूं मेरा रामा, सखा सहाई इक्क अखवाईआ। मुशर्द करदे फिरन सलामां, सजद्यां विच्च आपणा आप झुकाईआ। पढ़दे फिरन कलामा, कायनात दृढ़ाईआ। नारद कहे भगतो तुसीं नहीं जाणदे प्रभू दा किस तरां दा इंतजामा, ते बन्दोबस्त किस तरां आपणे हत्थ रखाईआ। जिस ने अवतार पैगम्बर गुरू सन्त भगत बणाए आपणा गुलामा, गुलामी दे जंजीर शरअ नाल बन्ह के जगत लोकमात दिते टिकाईआ। जदों खुशी विच्च आवे ते सचखण्ड विच्चों सुणावे, ते सतिगुर शब्द संदेशा लै के आवे, तत्तां वाले सरीर विच्च टिकावे, उह फिर अवतार पैगम्बर गुरू मुख रसना नाल गावे, ते अक्खरां दे अक्खर बणा लिखाए, ते कागज उत्ते टिकाए, ते ओसे दा ध्यान ओसे वल लगाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

(२३—५२७)

* * * * *

बचन अमोड़े गुर का भाई, विच्च संसार रहण ना पाई। संगत विच्च गुर अमृत बरखे, मंगे कहर देह ते वरते। संगत नूं एह राह बताया, सति कर मन्नो गुरू सुणाया। वरतावे कहर ना मेटे कोई, महाराज शेर सिँघ दी जोत प्रगट होए।

(७ जेठ २००६ बिक्रमी हरि बाणी दा अरंभ)

* * * * *

मो को आखे ईशर देव सभ भाई। मेरा नाम बाणी जगत अखवाई। बाणी विनाशे सतिगुर ना विनाशे। बाणी अलोप सतिगुर प्रकाशे। सतिगुर देवे भगतन को वड्डिआई। दरस पाए भगत जस गाई। मेरा नाम लैण जो भगतन। उस को बाणी जगत में कहितन। बाणी आप गुरू उपजावे। महिमा आपणी आप लिखावे। समें अनुसार करे अन्तकाल। थिर रहे एह आप दीन दयाल। दीन दयाल सदा प्रितपाल। महाराज शेर सिँघ लए बिरद संभाल।

(०१ ००२)

* * * * *

* * * * *

काल कीआ कलिजुग दा आ के। महाराज शेर सिँघ नां रखा के। सोहँ शब्द दा जाप करा के। बाकी सभन दा नास करा के। बाबे मनी सिँघ तों लिखत करा के। छे महीने कलम चला के। अठ्ठ मण साढे सत्त छटांक बाणी लिखवा के। चार जुग दा वरन करा के। (०१ ००३)

* * * * *

हरि बाणी हरि रूप है, गुर सतिगुर विच्च समाए। हरि बाणी सति सरूप है, सतिगुर साचा वेख वखाए। हरि बाणी चारे कूट है, दहि दिशा विच्च समाए। हरि बाणी साचा सूत है, ताणा पेटा इक्क अखवाए। हरि बाणी साचा भूप है, राज जोग सच सुल्तान इक्क कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, साचा मंतर नाम दृढ़ाए।

हरि बाणी हरि अन्तर ध्यान, गुर सतिगुर बूझ बुझाईआ। हरि बाणी मारे बाण महान, तीर निराला इक्क चलाईआ। हरि बाणी मेटे पंज शैतान, हउमे हिस्सा रहे ना राईआ। हरि बाणी मेटे नौजवान, पंचम मेल ना कोई वखाईआ। हरि बाणी लहणा चुकाए जगत जहान, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। हरि बाणी देवे धुर फ़रमाण, शब्द ढोला एका गाईआ। हरि बाणी होए दर परवान, हरि साचा लेखा लेखे पाईआ। हरि बाणी लोकमात कर प्रधान, आपणे नाम करे वडयाईआ। हरि बाणी गुरमुखां देवे जगत माण, भगत वछल वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, एका शब्द करे कुड़माईआ ।

हरि बाणी अमृत रस, गुर सतिगुर आप चवाया। पारब्रह्म अबिनाशी अंदर वस, आप आपणा भेव खुल्ह़ाया। दरस दखाए हस्स हस्स, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। तीर निराला मारे कस, अनयाला आप चलाया। साचा मार्ग लोकमात दस्स, दर दसवां आप खुल्ह़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका वर, गुर मंतर नाम समझाया।

हरि बाणी हरि का नेत्र, गुर गुर आप खुल्ह़ाइंदा। आपे वेखे काया खेतर, नव नव फोल फुलाइंदा। रुत्त बसन्ती महीना चेत्र, फल फुलवाड़ी फल महकाइंदा। गुरमुखां करे साचा हेतड़, नित नवित्त वेख वखाइंदा। लेखा जाणे पंचम जेठड़, वदी सुदी ना नाल रलाइंदा । हरिजन रक्खे साया हेठड़, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। लभ्भदे फिरदे कोटी कोट केतड़, दिस किसे ना आइंदा। राज राजान वड वड सेठड़, पुन्न दान सर्ब कराइंदा। मिले मेल ना हरि हरि मीतड़, मित्र प्यारा ना कोई मिलाइंदा। काया करे ना ठांडी सीतड़, अगनी तत्त ना कोई बुझाइंदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान गुरमुखां मेला आपे कीतड़, हस्त

कीट एका रंग रंगाइंदा। रंग रंगाए इक्क मजीठड़, लाल गुलाला रूप वटाइंदा। शाहो भूप वड बीठला बीठल, मोहन माधव नाउँ धराइंदा। आदि जुगादी जाणे रीतड़, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। सतिजुग साचा पतित पुनीतड़, पारब्रह्म प्रभ नाउँ धराइंदा। ना कोई गुरदवार ना मन्दर मसीतड़, चार वरनां सतिगुर एका रूप दरसाइंदा। हरि बाणी हरि शब्द जगत अनडीठड़, सतिगुर पूरा भेव खुल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण मेल मिलाइंदा।

हरि बाणी हरि जाणिआ, गुर सतिगुर रूप अपार। दर घर साचा इक्क पछाणिआ, मिल्या मेल श्री भगवान। लेखा चुक्का जीव जहानया, पाया पद पद निरबाण। अमृत मिल्या ठंडा पाणीआ, साचा नीर सीर विरोले दो जहान। सतिगुर पूरा गाए अकथ्थ कहाणीआ, लेखा जाणे ना वेद पुरान। गुरमुख साचा साची सुघड़ सवाणीआ, मेल मिलावा सीता राम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, एका नाम पिआए जाम।

हरि बाणी हरि नाम प्याला, गुर सतिगुर हत्थ फड़ाइंदा। सतिगुर पूरा दीन दयाला, आपणी दया कमाइंदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोई वखाइंदा। गुरमुख काया सची धरमसाला, साचा बंक सुहाइंदा। जोती नूर हाज़र हज़ूर इक्क उजाला, प्रकाश अकाश रखाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाला, बाल बाला लेखे लाइंदा। गल विच्च पाए एका माला, सोहँ हार गल विच्च पाइंदा। अजपा जाप आपे घाले आपणी घाला, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। फल लगाए साचे डाला, पत डाल्ह़ी वेख वखाइंदा। दो जहानी बण दलाला, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण मुख सलाहिंदा।

हरि बाणी साचा रंग साची अंमड़ीए, हरि सतिगुर आप चढ़ाइंदा। रंग रंगे काया माटी झूठी चंमड़ीए, चम्म दृष्टी इष्ट मिटाइंदा। कीमत करता कोई ना लाए पैसा धेला दमड़ीए, चरन प्रीती इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे आपे वेख वखाइंदा।

हरि बाणी हरि साचा ज़ोर, जगत जुगत बणाईआ। गुर सतिगुर आपे तोर, लोकमात करे जणाईआ। निरगुण आपणे हत्थ रक्खे डोर, सरगुण तन्द बंधाईआ। नेत्र खोल्ह़े हरन फोर, फुरना फुरे बेपरवाहीआ। आपे हुक्मे रिहा तोर, हुक्मी हुक्म फिराईआ। पावे सार अन्ध घोर, एका जोत कर रुशनाईआ। हरि बिन अवर ना दीसे कोई होर, ना कोई कुदरत रचन रचाईआ । लक्ख चुरासी ना जोड़े जोड़, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई सहाईआ। हरि का रूप सति सरूप गुरमुखां चुकाए मोर तोर, तेरा मेरा रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि बाणी आपणी आप सुणाईआ।

हरि बाणी पतित पुनीत, पतित पावण आप चलाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, रसना गावत गावत गावत पार कराईआ। धुर दा शब्द साचा मीत, साक सज्जण सैण इक्क अखवाईआ । गुरसिख गौणा सोहँ सुहागी गीत, सतिगुर पूरा करे कुड़माईआ। अठ्ठे पहिर वसे चीत, चेतन्न सता आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, बंक दवारा इक्क वखाईआ।

हरि बाणी बाण निराला, गुर सतिगुर हत्थ उठाया। रसना चिल्ला तीर कमाना, लोकमात आप चलाया। खेले खेल दो जहानां, भेव अभेदा भेव छुपाया। गुरमुखां मारे इक्क निशाना, सोए मात लए उठाया। पुरख अबिनाशी बीना दाना, दाना बीना आप हो जाया। हरिजन करे ठांडा सीना, सति सति सति वरताया। तिन्नां लोकां पार कीना, ब्रह्मा विष्न शिव राह रहे तकाया । आपणा रंग चढ़ाया भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल सुहाया। रसना जिह्वा जिस जन सोहँ चीना, चिन्ता सोग रहे ना राया। अन्तम अन्त आप आपणे जेहा कीना, हँ ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा खेल खलाया।

हरि शब्द सची धुनकार, धुर बाणी नाउँ धराईआ। पुरख अगम्म खेल करतार, कुलावन्त कल वरताईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त सिरजणहार, अन्त आदि वड्डी वडयाईआ । कन्त कन्त कन्त हरि नार भतार, दर सुहागण सोभा पाईआ। इच्छया भिच्छया कर शिंगार, भूशन बस्त्र इक्क सज़ाईआ। कौसतक मणीआ साचा हार, मस्तक टिक्का तिलक ललाट लगाईआ। नैणां कज्जल नाम धार, लोइण रही मटकाईआ। हस्स मुख बत्ती दन्द उच्चार, गोबिन्द गोबिन्द जिह्वा रही गाईआ। सरवन सुनण कन्त प्यार, धुनी नाद एका लिव लाईआ। नक्क वासना सुगंधी वेख विहार, गुर संगत संग महकाईआ। बन्दी तोड़ आया विच्च संसार, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ । शाहो भूप साचे घोड़े चढ़या शाह सवार, सोलां कलीआं आसण पाईआ। सोलां सोलां बन्ने धार, सोलां सोलां वड वडयाईआ। सोलां सोलां मारे मार, सोलां सोलां लेख लिखाईआ। बदलिआ चोला कलिजुग तेरी अन्तम वार, पंज तत्त ना कोई रखाईआ। बणया गोला गुरसिख दवार, लोक साची सेवा रिहा कमाईआ। गाया ढोला बेऐब परवरदिगार, सोहँ रसना गाईआ। बणया तोला विच्च संसार, नाम कंडा हत्थ उठाईआ। पाए रौला नर नार, चारों कुण्ट पई दुहाईआ । मनमुख माया करे ख़ुआर, कामी क्रोधी लोभी आसा तृष्ना होई हलकाईआ। माणस मानुक्ख जन्म गए हार, गल पाई जम की फाहीआ। दरश ना पाया गुर करतार, जगत वेख वेख नैण नैणां नाल मिलाईआ। बन्द किवाड़ ना खोल्लया ताक, आपणी अक्ख ना आप उठाईआ । गुरमुखां मेला साचे सज्जण सैण साक, सतिगुर पूरा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि बाणी हरि मंतर, गुर सतिगुर मुख सुणाईआ।

सतिगुर गाए धुर धुर राग, हरि रागी राग अलाइंदा। शब्द अगम्मी एका अवाज़, धुर धामी आप सुणाइंदा। आपे रच्चया सच काज, साची वस्तू संग रखाइंदा । जुगा

जुगन्तर ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। कलिजुग अन्तम देस माझ, मज़न माघ इक्क वखाइंदा । हाढ़ सतारां साजण साज, जन भगतां भगती लेखे लाइंदा। सीस रखाए साचा ताज, आपे वेख वखाइंदा। धुरदरगाही एका राज, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण पार कराइंदा।

पार उतारा आपे कर, गुर शब्दी बेड़ा हरि चलाईआ। आप उतारे आपणे घर, वंज मुहाणा इक्क रखाईआ। आवण जावण दो जहानां चुक्के डर, साचा दामन रिहा फड़ाईआ । गुरमुख ज़ामन बणया हरि, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। कलिजुग मेटे हँकारी रावण गढ़, हउमे लंका गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख गुरमुख गुर गुर गुर झोली पाईआ।

गुरसिख आपणी झोली पा, पूरब लहणा लहण चुकाइंदा। सतिगुर साजण बण मलाह, बेड़ा मात चलाइंदा। अन्तम वेले पकड़े बांह, लेखा लेख लखवाइंदा। निहकलंकी जामा पा, जोत जात जगत इक्क वखाइंदा। गुरसिखां बणया पिता मां, बाल अंञाणे गले लगाइंदा । हरि संगत तेरी ठंडी छाँ, सतिगुर सिर आपणा हेठ धराइंदा। इक्क दूजे दी फड़ी बांह, दूजा विचोला ना कोई वखाइंदा । पुतरां प्यारी लग्गे मां, मां पुत्तरां संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई गोपी ना कोई काहन, ना कोई सीता ना कोई राम, ना कोई तीर ना कमान, ना कोई रथ रथवाही दिसे निशान, एका जोती नूर वाली दो जहान, गुरमुखां करे कल पछाण, लक्ख चुरासी मार ध्यान, एका देवे सोहँ दान, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोई गोत ना कोई वरन, अंस बंस बंस अंस, अंसा बंसा आप अखवाइंदा। (०८ ६३४—६३७)

* * * * *

गुर बाणी हरि का जस, गुर गुर हुक्मी हुक्म गाईआ। निरगुण सरगुण अंदर वस, आपणा भेव आप खुलाईआ। पुरख अकाल नानक करे पूरी आस, आप आपणा भेव खुलाईआ। साचे मण्डल साची रास, जोती जाता दए वखाईआ। लहणा तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल उप्पर डेरा लाईआ। सचखण्ड दुआरे कर कर वास, सच सिँघासण सोभा पाईआ । धुर फ़रमाणा देवे धुर धरवास, धुर दरबारी आप जणाईआ। आत्म परमात्म घट घट वास, वरन गोत ना कोई रखाईआ। पंज तत्त चोला काया गुर अवतारां होवे नास, थिर कोई रहण ना पाईआ। हरि का शब्द सदा प्रकाश, ना मरे ना जाईआ। जुग चौकड़ी गौंदे रहे रसन स्वास, हरि का भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर बाणी भेव खुलाईआ।

हरि का नाउँ गुर गुर बाणी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। सतिगुर महिमा अकथ्थ कहाणी, लिख लिख लेख बणाइंदा। गुर गुर रूप खेल महानी, बिन सतिगुर बाणी नाउँ

ना कोई अलाइंदा । बिन बाणी सतिगुर कोई ना होए जाण जाणी, गुर गुर निशाना नज़र कोई ना आइंदा। दोहां विचोला शाह सुल्तानी, आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक देवे साचा वर, गोबिन्द एका बूझ बुझाइंदा।

नानक गोबिन्द परदा खोलू, हरि जू हरि हरि आप बुझाईआ। सतिगुर साजण बोले बोल, अक्खर वक्खर आपे गाईआ। हरि का नाउँ तोले तोल, तोलणहारा आप हो जाईआ। शब्दी गुर घट घट जाए मौल, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। बाणी गुर गुर बाणी आदि जुगादी इक्क दूजे दे वसण कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द इक्क समझाईआ।

गुर शब्द साचा गुर, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। नानक निरगुण गिआ जुड़, निरवैर भेव खुलाइंदा। निरगुण सरगुण आपे बौहुड़, भेव अभेद आप जणाइंदा। नाता तोड़े मिट्ठा कौड़, रस अनडिठा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर बाणी आप प्रगटाइंदा।

गुर बाणी सतिगुर राग, रसना जिह्वा आपे गाईआ। बाणी मेला शब्द सुहाग, गुर गुर कन्त हंढाईआ। दोहां विचोला बणे आप, निरंतर आपणी धार वखाईआ। आत्म परमात्म सच्चा जाप, जीवण जुगत दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर का शब्द एका गुर वडयाईआ।

एका गुर इक्क अवतारा, एका बूझ बुझाइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। महिमा अकथ्थ बोले जैकारा, जै जै आपणे नाउँ कराइंदा। चलाए रथ विच्च संसारा, बोध ज्ञान आप दृढ़ांइंदा। समरथ पुरख करे खेल अपारा, नानक गोबिन्द साचा फ़िरका इक्क समझाइंदा। साचा फ़िरका बिन ज़ात पात, वरन गोत ना कोई रखाईआ। सतिगुर पूरा मेटे अन्धेरी रात, आत्म चन्द इक्क चढ़ाईआ। शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश बणाया साक, आपणा बंधन पाईआ। पंचम मीता बोल वाक, सीस आपणा रिहा झुकाईआ। गुर चेला वसे पास, चेला गुर रूप वटाईआ। हरि का नाउँ ना जाए विनास, गुर शब्द आदि जुगादि समाईआ । गुरू ग्रन्थ गुर बूझे कर किआस, खिआनत नेड़ कदे ना आईआ। अन्त उतारे आपणे घाट, मंजधार ना कोई रुड़ाईआ। पंज तत्त चोला देवे कोई ना साथ, नानक गोबिन्द शब्द सरूप शब्दी गुर इक्क अखवाईआ। कलिजुग अन्तम वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया करे विनास, फ़तहि डंका इक्क वजाईआ। पुरख अकाल लक्ख चुरासी गाए स्वास स्वास, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। गुर शब्द सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा घट घट वसे पास, गुर बाणी गुर शब्द कहाणी, कह कह गुर गुर आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दी साची राणी, सचखण्ड दी सच सवाणी, लोकमात भगत भगवन्त साचे सन्त गुरमुख गुरसिख गुर गुर शब्द आप परनाईआ। (१०—८८ ८६)

* * * * *

किआ बेनन्ती किआ पुकार, आपणी गत जीवण जुगत कहण ना जाईआ। मन मत बुध ना सके विचार, हरि का भेव भेव ना राईआ। कागद कलम करे पुकार, नेत्र रोवे जगत शाहीआ। हरि जू हरि मन्दर वस्सया सभ तों बाहर, आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। जो बोले सो सुणे सुणनेहार, भुल्ल कदे ना जाईआ। हरि का बोलिआ जीव ना सके कोई विचार, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख गुरसिख आपणे कंडे आपे तोलिआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, एका एक सैहज सुखदाईआ।

(०६—१०३४)

* * * * *

निरँकार घर आया निरँकारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। इक्क दूजे दी पुच्छो धारा, कवण बैठे आसण लाईआ। कवण करे सर्ब पसारा, कवण घट घट रिहा समाईआ। कवण शब्द नाद धुनकारा, कवण अनहद राग अलाईआ। कवण अमृत आत्म देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना आप पिआईआ। धुर की बाणी ना जाणो आवारा, जीव जंत कहण ना पाईआ। बिन सचखण्ड निवासी साचे शब्द ना बणे कोई लिखारा, लिख लिख थक्की सर्ब लोकाईआ। इक्को निरँकार घर घर पाए पुआड़ा, दर दर पई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरँकार वेखे निरँकार घर, बिन निरँकार निरँकार वेखण कोई ना आईआ।

(१३—६६२)

* * * * *

गुरसिख गुर उठाया, सतिगुर किरपा धार। उजल मुख आप कराया, दुरमत मैल उतार। आत्म सुख इक्क उपजाया, अमृत बख्शे ठंडी ठार। कलिजुग कूड़ा रोग मिटाया, सोग रहे ना विच्च संसार। चरन प्रीती जोग सिखाया, दिवस रैण इक्क प्यार। अजपा जाप आपणा आपे रिहा गाया, जीव जंत ना पाइण सार। जिस जन सिर आपणा हत्थ टिकाया, तिस जन चारे बाणी करन निमस्कार। हरि की बाणी हरि का रूप वटाया, गुर शब्दी शब्द जैकार। गुर का शब्द गुर इच्छया बाहर वखाया, भिच्छया पाए आप निंराकार। औंदा जांदा दिस ना आया, लिख लिख कलम करे विचार। सरगुण बाणी रूप प्रगटाया, चार खाणी होए उधार। चारे खाणी रंग रंगाया, मन मत बुध पैज सुआर। मन मत बुध दए समझाया, पद एका एकंकार। तिन्नां लेखा रहण ना पाया, घर चौथे मेला कन्त भतार। साची सख़ी मिल हरि कन्त सगन मनाया, सोहिआ बंक दवार। एका अलफ़ी तन शंगार कराया, लक्ख चुरासी चोली गलों उतार। पारब्रह्म अबिनाशी करते हलफ़ीआ ब्यान आप सुणाया, उच्ची कूक कूक पुकार। जुग जुग भगत तेरा संग निभाया, विछड़ ना जावां विच्च संसार। तेरा तन मरदंग रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए खेल अपार।

(६ - ८११)

* * * * *

साचा नाउँ अमृत बाणी, भगत भगवान आप जणाइंदा। सत सरोवर देवे ठंडा पाणी, रस इक्को इक्क वरवाइंदा। बोध अगाध जणाए सच कहाणी, महिमा अकथ्थ कथ दृढ़ांइंदा। सुरत शब्द मिलाए साचा हाणी, दर घर साचा इक्क वडिआइंदा। चरन कँवल बख्शे प्रभ ध्यानी, निज नेत्र नैण खुल्ह़ाइंदा। देवणहारा पद निरबाणी, निरबाण पद इक्क वरवाइंदा। वरवावणहारा सच निशानी, सति दुआरे पड़दा लाहिंदा। निरगुण जोत नूर महानी, जलवा नूर नूर दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अमृत बाणी आप जणाइंदा।

अमृत बाणी सुणाए नाद, अनहद राग अलाईआ। भगत भगवान साचे लाध, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, विख रूप रहण ना पाईआ। बिन रसना जिह्वा देवे सुआद, निझर झिरना आप झिराईआ। कूड़ी क्रिया देवे काढ, सच सुच्च दए वरवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस नाम अमृत बाणी दए समझाईआ।

अमृत बाणी हरि का नाउँ, निरँकारा आप दृढ़ांइंदा। लेखा जाणे अगम्म अथाहो, भेव अभेद खुल्ह़ाइंदा। भगत भगवान फड़ फड़ बाहों निरगुण निराकार निरँकार आप जणाइंदा । नाता जोड़े जिउँ पुत्तरां माउँ, पिता पूत गोद सुहाइंदा। नथाविआं देवे साचा थाउँ, थान थनंतर इक्क वरवाइंदा। सदा सदा सद देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हत्थ रखवाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, काग हँस रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे रंग रंगाइंदा।

अमृत बाणी आत्म रस, रस रसीआ आप जणाईआ। भगत भगवान हो वस, बण सेवक सेव कमाईआ। जिउँ गोराया विच्च गिआ फस, राह विच्च फांदी बैठे डेरा लाईआ । पारब्रह्म पतिपरमेशवर ना जाए नड्ड, बल आपणा ना कोई रखवाईआ। ग़रीब निमाणयां कर इक्ठ, साचा मता लिआ पकाईआ। जिंनां चिर साडे अंदर ना जाए वस, हर हिरदे डेरा लाईआ। आपणा मन्दर ना देवे दस्स, द्वैती परदा आप चुकाईआ। अमृत देवे ना मिट्ठा रस, खैहड़ा छड्डो ना मिल के भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम अमृत बाणी दए समझाईआ।

नाम अमृत बाणी सतिगुर प्यार, दूजी धार ना कोई वरवाइंदा। अंदरे अंदर करे गुफ्तार, गुफ्त शुनीद खेल वरवाइंदा। करे खेल आप करतार, करनी आपणी आप जणाइंदा । दर दरवेश बण भिखार, हरि अलक्ख निरँजण अलख जगाइंदा। भगत भगवन्त खेल नयार, निरगुण सरगुण आप खलाइंदा। सच्चा नाद वज्जे धुनकार, रुण झुण आपणी आप समझाइंदा । सड़क कन्ढे बैठे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आप पुचाइंदा। इस तों परे ना कोई करतार, सच दुआरा ना कोई वडिआइंदा। जिस अन्तर इक्क अधार, तिस मंतर नाम सुणाइंदा।

बाणी अमृत करे पुकार, गुरमुखां राह तकाइंदा। बिन भगतां करे ना कोई शिंगार, सच रूप ना कोई वटाइंदा। तख़त निवासी एकंकार, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। बेवस हो के डिगा मूंह दे भार, आपणा बल ना कोई जणाइंदा। देवणहार इक्क दातार, दाता दानी आप अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

अमृत बाणी करे पुकार, प्रभ अग्गे कूक सुणाईआ। बिन भगतां नज़र कोई ना आए मीत मुरार, लक्ख चुरासी गूड़ी नींद सवाईआ। सच दर मिले ना कोई दुआर, दर सच्चा दरस ना कोई वखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी बणया गढ़ हँकार, हउमे हंगता करे लड़ाईआ। बिन हरि कन्त मिले ना कोई सच्चा यार, यारी सच ना कोई निभाईआ। मेरी सुणे ना कोई गुफ्तार, मेरा राग कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अमृत बाणी दोए जोड़ वास्ताा पाईआ।

अमृत बाणी मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। जिंना चिर तूं ना होवें संग, मेरी कदर किसे ना पाईआ। गुरदर शिवदुआले मट्ठ मेरा तेरा होया नंग, ओढण नज़र कोई ना आईआ। रसना जिह्वा गाए मेरा छन्द, प्यार प्यार विच्च ना कोई बंधाईआ। मैं पार कर के आई दूई द्वैती कंध, जन भगतां डेरा डेरे लाईआ। आ के सुणिआ सच्चा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा सारे रहे गाईआ। मैनूं आपणा भुल्लया अनन्द, तेरा अनन्द नज़री आईआ । जिध्धर वेखां वेख्या चन्द, गुरमुख नूर जोत रुशनाईआ। जिन्नां मिल्या साहिब बख़्शंद, बखशिश इक्को वार वरताईआ। चरन प्रीती साची गंढु , तुट्टी गंढु वखाईआ। अमृत बाणी आपणा नाम दे के पाई ठंड, अगनी वा ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अमृत बाणी रिहा समझाईआ।

अमृत बाणी उठ नेत्र खोल्ह, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ । जिस दा वजौंदी फिरें ढोल, सो साहिब फेरा पाईआ। जन भगतां वसे कोल, तेरी लोड़ रहे ना राईआ। हरि तोलिआ आपणा तोल, नाम कंडा हत्थ उठाईआ। तूं चार जुग रही अनभोल, तेरी अक्ख ना किसे खुल्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत बाणी रिहा जणाईआ।

अमृत बाणी तेरा राह, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। तूं मेरी करें सिफ्त सालाह, सदा सद तेरी सेव लगाइंदा। अन्तम संदेसा दएं जणा, धुर फ़रमाणा आप अलाइंदा। मेरे भगतां नाल मिल के मेरा गीत गा, गीत सुहागी इक्क जणाइंदा । इक्को उपजे सच्चा नां, नाउँ निरँकारा आप समझाइंदा। निमाणयां देवे साचा थां, थान थनंतर इक्क जणाइंदा । ऊँचां नीचां राउ रंकां दए पढ़ा, शाह सुल्तानां आप समझाइंदा। चार वरन तेरा जाम दए पिआ, प्याला आपणे हत्थ रखाइंदा। बाणी बाण निराला तीर जाए चला, अणयाला नज़र किसे ना आइंदा। करे खेल सच्चा शहनशाह, शाह पातशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अमृत बाणी इक्को नाम दरसाइंदा ।

अमृत बाणी हरि का जस, जस वेद पुरान जणाईआ। अमृत बाणी हरि महिमा अकथ्थ, कथ कथ समझाईआ। अमृत बाणी मेल मिलावा पुरख समरथ, समरथ आपणे अंग लगाईआ । अमृत बाणी निरगुण जोत करे प्रकाश, श्री भगवान आपणा नूर रिहा वखाईआ। अमृत बाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्को इक्क रिहा जणाईआ ।

अमृत बाणी धुर दी धार, धुर दरबारी आप समझाइंदा। अमृत बाणी भगत आधार, हरि भगवन आप समझाइंदा। अमृत बाणी अनहद नाद सुणे सुणाए पुकार, भेव अभेद खुल्ह़ाइंदा । अमृत बाणी अमृत देवे सच भंडार, निझर झिरना आप वखाइंदा। अमृत बाणी नाता तोड़े नौं दुआर, घर इक्को इक्क वडिआइंदा। अमृत बाणी लहणा देणा मुकाए कूड़ कुड़िआर, सच सुच्च इक्क वडिआइंदा। अमृत बाणी मेल मिलावा करे कराए नार कन्त भतार, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत बाणी इक्को नाउँ वडिआइंदा।

अमृत बाणी दस्से हाल, आपणा हाल जणाईआ। अमृत बाणी सिफ्त करे दीन दयाल, दयानिध मंगे सरनाईआ। अमृत बाणी जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क वखाईआ। अमृत बाणी साचा मार्ग दए वखाल, हरि आपणा रंग रंगाईआ। अमृत बाणी घर घर विच्च बणे दलाल, बण सेवक सेव कमाईआ। अमृत बाणी गुरमुख विरला पाए लाल, जिस जन आपणी दया कमाईआ। अमृत बाणी नाता तोड़े काल, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ । अमृत बाणी साचा मन्दर दए वखाल, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अमृत बाणी आपणा नाउँ वडयाईआ।

अमृत बाणी हरि का नाउँ वड, वड वड्डा आप वडिआइंदा । आपणी धारों बाहर कढ़ु, धार धार विच्च दरसाइंदा। अमृत बाणी रक्खे अंदर हद्द, पार किनारा ना किसे वखाइंदा। अमृत बाणी वजाए नद, अनरागी राग अलाइंदा। अमृत बाणी जाम पिआए मध, रस इक्को इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत बाणी इक्को इक्क वडिआइंदा ।

अमृत बाणी इक्को नूर, नूर नूर दरसाईआ। अमृत बाणी सरधा पूर, आसा मनसा वेख वखाईआ। अमृत बाणी हाज़र हज़ूर, हरि सतिगुर होए सहाईआ । अमृत बाणी नाता तोड़े कूड़, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। अमृत बाणी चतुर सुघड़ बणाए मूरख मूढ़, मूढ़े आपणे धंदे लाईआ। अमृत बाणी कोट जन्म दे बख्शे मात कसूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को घर जणाईआ।

अमृत बाणी घर एका, एकंकारा आप बुझाइंदा। अमृत बाणी साची टेका, सति पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। अमृत बाणी करे बुद्ध बबेका, बबेकी आपणा राह वखाइंदा ।

अमृत बाणी चुकाए पूरब लेखा, लेखा अगला पन्ध मुकाइंदा। अमृत बाणी करे सच्चा हेता, हितकारी वेख वखाइंदा। अमृत बाणी अन्तर आत्म खोल्हे भेता, भेव अभेद जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आप दृढ़ांइंदा ।

अमृत बाणी भगत जन, श्री भगवान आप जणाईआ। संसा चुके मनसा मन, मन वासना दए मिटाईआ। लेखा तोड़ काया तन, पंज तत्त दए सुहाईआ। माणस जन्म बेड़ा बन्नू, आपणे कन्ध उठाईआ। साचा दे नाम धन, भंडारा इक्क वरताईआ। निरगुण जोत चाढ़ चन्न, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सोहँ ढोला सुणाए छन्द, अमृत बाणी आपणा रूप दरसाईआ। गुरमुख विरला जाए मन्न, जिस मेहर नज़र टिकाईआ। लक्ख चुरासी नेत्र अन्नू, सरवण सुणन कोई ना पाईआ। तख़त निवासी श्री भगवन, भगतन देवे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड वडयाईआ।

अमृत बाणी कहे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। किरपा कर आप करतार, तेरे हत्थ मेरी वडयाईआ। तेरा नाद शब्द धुनकार, तेरा राग अगम्म अथाहीआ। तेरा साचा मंगलाचार, नज़र किसे ना आईआ। मैं मंगाँ मंग भिखार, झोली आपणी अग्गे डाहीआ । किरपा कर सिरजणहार, प्रभ होणा आप सहाईआ। तेरे हुक्मे अंदर करां प्यार, आपणा माण ना कोई रखवाईआ। जा के भगतां करां दीदार, जो तेरा नाम धिआईआ । अंदर वड़ के देवां आधार, आपणी बूझ बुझाईआ। घर वड़ के बोलां जैकार, तूं ही तूं ही तूही ढोला गाईआ । तेरा रूप नज़री आए निरँकार, दूजा नूर ना कोई रुशनाईआ। जिस घर तेरा दरबार, तिस मिले माण वडयाईआ। मैं निउँ निउँ करां निमस्कार, बण सेवक सेव कमाईआ । जिस वेले भगतां कोलों सोहँ शब्द सुणां जैकार, माण ताण रहे ना राईआ। मैं आखां मैनूं महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दिउ वखाल, बिन नैणां दर्शन पाईआ। जिस दे पिच्छे होए कंगाल, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। अक्खां अंदर थक्की भाल, निशअक्खर रूप नज़र ना आईआ। कलिजुग अन्तम चली अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क चलाईआ। भगतां अंदर वड़िआ सची धरमसाल, धर्म दुआरा आप बणाईआ। ओथे सुणे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाईआ। जिस नाता तोड़िआ शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोई रखवाईआ। प्रेम प्याला दिता प्याल, अमृत आपणा नाम जणाईआ । प्रेम प्यार तीर निराला मारया बाण, मुखी तिक्खी धार वखाईआ। मैं उस दी करां पहचान, बेपहचान आया माहीआ। जिस ने मैनूं दिता दान, सो भगतां झोली रिहा भराईआ । मैं नित नित गावां उहदा गान, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अमृत बाणी अकथ्थ कहाणी धुर निशानी जोत नुरानी शब्द तुरानी, इक्को तूर जणाईआ।

दास बणे जन दीना, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नाता जोड़े जिउँ जल मीना, बिरहों रोग ना कोई सताईआ। ठांडा करे सतिगुर सीना, अमृत बाणी मेघ बरसाईआ। मेट मिटाए ताप तीनां, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ । गुरसिख बणया ना रहे नाबीना, निज नेत्र दए खुल्हाईआ। हरिजन होए ना भाग हीणा, भाग आपणा झोली पाईआ। नाम निधान

वजाए साची बीना, अनरागी राग सुणाईआ। लक्ख चुरासी नालों वक्ख कीना, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। मौले रुत्त चेत महीना, बसन्ती इक्को इक्क वखाईआ। चाढ़े रंग सतिगुर भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ। अगला लेखा चुक्के मरना जीणा, जीवण मुक्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणे लेखे लाईआ।

औखा बणना दीनन दीन, हरि दाता सच जणाइंदा। साहिब सचे दी साची ईन, जुग चौकड़ी राह चलाइंदा। भगत भगवान लेखा मस्कीन, माण ताण ना कोई वखाइंदा। मार्ग दस्से इक्क महीन, जग नेत्र नज़र ना आइंदा। कूड़ी क्रिया गुरमुखां कोलों छीन, सतिगुर आपणी झोली पाइंदा। आत्म परमात्म दए यकीन, धुर भरवासा आप बंधाइंदा। पंच विकार करे तलकीन, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाइंदा ।

वेखणहारा दीनन दीन दयाल, दयानिध आपणी दया कमाईआ। गुरसिख वेखे आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ । गुरसिख सतिगुर लए उठाल, गुर गुर बूझ बुझाईआ। सन्तां वखाए सची धरमसाल, घर मन्दर कुण्डा लाहीआ। भगत भगवान चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। साचा मार्ग इक्क वखाल, भेख अवलड़ा दए जणाईआ। निरगुण दीवा बाती इक्को बाल, नूरो नूर नूर रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

दीन बणे जो दर दुआर, आपणी दया कमाइंदा । अन्तम आत्म कर प्यार, परम पुरख वेख वखाइंदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा । जोत इकांती दीआ बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। काया मन्दर अंदर सची धरमसाल, दस्म दुआरी कुण्डा लाहिंदा। आत्म सेजा सच बहाल, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। साचा वजावे नर हरि ताल, तलवाड़ा नज़र कोई ना आइंदा। सदा सदा सद करे प्रितपाल, प्रितपालक वेख वखाइंदा । भगतां पूरी करे घाल, कीती घाल लेखे लाइंदा। आपणा आपे करे हल्ल सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन इक्को इक्क वडिआइंदा।

दीन होए सो सच्चा सिख, जिस जन आपणी दया कमाईआ। अमृत बाणी पाए भिख, भिच्छया आप वरताईआ। अग्गे लेखा देवे लिख, लिखया लेख ना कोई मिटाईआ। जिध्धर वेखे साहिब सतिगुर आए दिस, दूजा रूप ना कोई दरसाईआ। जन्म जन्म दी मिटे विख, कर्म कांड रहण ना पाईआ। दर्शन देवे नित नित, नवित्त आपणा फेरा पाईआ। लेखा जाणे मात पित, पिता पूत गोद उठाईआ । दीनां कदे ना देवे पिठ्ठ, हँकारीआं मुख ना कदे वखाईआ । जिन्हां सतिगुर वले कीते मुख, फड़ बाहों गोद बहाईआ। ना माणस ना मानुख, देवत सुर ना कोई वडयाईआ। शब्दी शब्द गोदी लए चुक्क, दो जहान लेखा पार कराईआ। दीन बूटा कदे ना जाए सुक्क, सतिगुर हरया आप कराईआ। जो एस निशानउँ गिआ उक्क, लक्ख चुरासी पन्ध ना कोई मुकाईआ। जननी सफल ना होए कुक्ख, मात गरभ ना कोई

वडयाईआ । आवण जावण मिटे ना दुःख, दुखीआं दुःख ना कोई गवाईआ। दीनां अनाथां देवे आपणा सुख, सुख अमृत बाणी नाम जणाईआ। जो जन हिरदिउँ गिआ झुक, तिस लेखा रहे ना राईआ। एथे ओथे उजल होवे मुख, दुरमत मैल नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन लेखा दए मुकाईआ।

गुरमुख बणया दीन, दर आपणा आप गवाया। प्रभ वेखणहारा नेत्र नैण हीन, बिन अक्खां फोल फुलाया। ठाकर हो के बणे अधीन, सेवक साची सेव कमाया। गुरमुख बणाए आप नगीन, नगीना आपणे मस्तक लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, दीन बणन दी सिखिआ रिहा समझाया।

दीन बणो विच्च लोक जग, जग जीवण दाता आप जणाईआ। कूड़ी क्रिया दिउ तज, माण अभिमान रहण ना पाईआ। सतिगुर दुआर वेखो भज्ज, बण बण पान्धी आईआ। इक्को नगारा रिहा वज्ज, दूजा राग ना कोई अलाईआ। अनाथ अनाथां रिहा सद्द, सद्दा नाम जणाईआ। सृष्ट सबाई पार करे हद्द, हदूद आपणी दए वखाईआ। ढोला सुणाए साचा छन्द, छंत करे नाम पढ़ाईआ। साहिब सतिगुर परदा देवे कज्ज, मेहर नज़र नैण उठाईआ । लौण देवे ना किसे अज पज, धोखे विच्च कदे ना आईआ। जिस ने गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सिखाया चज्ज, आपणी पट्टी नाम पढ़ाईआ। सो भगवान भगतां प्रेम अंदर गिआ बज्झ, आप आपणा माण मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन इक्को इक्क वडयाईआ।

दीन बणे जग साचा सन्त, जिस अन्तर नाम वसाया। मेल मिलाए नर हरि कन्त, नरायण दया कमाया। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, आसा तृष्ना मोह चुकाया। नाम जणाए इक्को मंत, हरि अमृत बाणी रूप वखाया। बोध अगाध महिमा जणाए अगणत, भेव अभेद खुल्हाया । मेल मिलाए साची संगत, संग आपणा सदा रखाया । दूजे दर ना होए मंगत, ख़ाली झोली दए भराया। जिउँ नानक निरगुण अंग लगाया अञ्जण, अंगीकार आप हो जाया। माणस जन्म ना होए भंगत, भाण्डा भरम भउ दए भन्नाया। भेव जाणे ना कोई पंडत, ग्रन्थी नज़र किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन गुरमुख इक्क बणाया ।

दीन बणे सच्चा गुरमुख, गुरमुख गुर सालाहीआ। जन्म जन्म दा मिटे दुःख, दुःख दर्द रहण ना पाईआ। दरस दखाए जो बैठा लुक, घर घर विच्च परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती भगत समझाईआ।

दीन बणाए कलिजुग अन्त भगत, भगवन राह जणाईआ। नाता तोड़ कूड़े जगत, साक सज्जण सैण नज़र कोई ना आईआ। लेखे लाई बूंद रक्त, प्रभ चरन लए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन दीन आप बणाईआ।

दीन बणे गुर चरन कँवल, मिले माण वडयाईआ। कराए खेल उप्पर धवल, बेपरवाह सच्चा शहनशाहीआ। जिस नूं कैंहन्दे नूर अव्वल, सो परवरदिगार वेस वटाईआ। जिस दा अमृत बूंद नाभ कँवल, रस आपणा नाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अमृत बाणी साचा नाउँ, दीनन देवे फड़ के बाहों, दर दर घर घर नर नरायण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, मार्ग इक्को इक्क समझाईआ। (२८ फग्गण २०१६ बिक्रमी)

* * * * *

जन भगत कहे मैं दस्सण आया कहाणी, कहावत नाल रलाईआ। जन भगतो प्रभू दी भुलिओ कदे ना बाणी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग चढ़ाईआ। सति धर्म दी रक्खयो याद निशानी, कूड़ अपराध ना कोई कमाईआ। तुहाढ्ढा आत्म जोत नुरानी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ । खेल वेखणा दो जहानी, लोक परलोक खुशी मनाईआ। अमृत जल पीणा ठंडा पाणी, निझ आत्म रस चखाईआ। तुहाढ्ढी सतिगुर दवारे मनज़ूर सदा कुरबानी, जे मन दी मनसा दिउ मिटाईआ। तुहाढ्ढी चढ़दी सदा जवानी, बुढेपा परत कोई ना आईआ। मिले वड्डिआई विच्च चार खाणी, चारों कुण्ट होए रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क तराईआ। (१६—१६०)

हरि मन्दर हरि दवार हरि साचा ताल सुहाया। निरगुण जोती कर उजिआर, गुर अरजन वेख वखाया। अठ्ठे पहर रंग करतार, अन्ध अन्धेर दिस ना आया। दिवस रैण शब्द धुंनकार, धुन अनादी रिहा वजाया। चरन कँवल हरि कर प्यार, गुर नानक नज़री आया। नानक बोले कर प्यार, अरजन वेख वखाया। आए दान धुर फ़रमाण, लेखा एह समझाया । चिट्टे उत्ते लिख काला निशान, ना कोई सके मेट मिटाया। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, भेख पखण्ड रहण ना पाया। गुर का ज्ञान ना कोई वेचे विच्च दुकान, ना हट्टो हट्ट फिराया। दो जहान कीमत कोई ना सके चुकान, ना कोई मुल्ल पवाया। धुर दी बाणी धुर दी बाण, धुर करता रिहा लिखवाया। अकाल पुरख होया मेहरवान, गुर अरजन सेवा लाया। शब्द गुर आया विच्च मैदान, आपणा पड़दा लाहिआ। गुरमुख विरला करे ध्यान, जिस जन बूझ बुझाया। जगत ज्ञान ना सके पछान, पढ़ पढ़ वादि वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अरजन दिता एका वर, एका गुर वखाया।

एका गुर इक्क ग्रंथ, एका रूप दरसाइंदा। एका सिख एका सिखिआ एका पन्थ, एका मार्ग लाइंदा। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या ना कोई रहे अन्त, असथिल कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर जणाई लोकमात वज्जे वधाई धाम सुहाए इक्क अनडीठिआ।

गुरू ग्रंथ शब्द चोट, एका तन लगाईआ। मनमुखां कढ्ढु काया खोट, जो जन हिरदे

रिहा दिसाईआ। ग्रन्थी पन्थी माया भरे ना कोई पोट, ना कोई विश्टा वढ्ढी लै लै खाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा शब्द धर, शब्द गुर रिहा सलाहीआ।

शब्द गुर गुर दीनां, शब्दी लेख लिखाया। शब्दी शब्द शब्द रस भीन्ना, शब्दी रंग चढ़ाया। शब्द जल शब्द मीना, शब्द शब्द विच्च समाया। शब्द बंने लोक तीनां, अकाश प्रकाश शब्द टिकाया। शब्द दाना शब्द बीना, दाना बीना शब्द अखवाया। शब्द खाणा शब्द पीणा, शब्द तृसना तृप्त कराया। शब्द मरना शब्द जीणा, शब्द शब्द लए उपाया। शब्द जोधा शब्द परबीना, शब्द डंक वजाया। शब्द पंचम नीचो नीच शब्द हीणा, शब्द निउँ निउँ सीस झुकाया।

शब्द राज शब्द राजाना, शब्द शाह सुलतान अखवाया। शब्द काज शब्द साज, शब्द बंध बंधाया। शब्द सीस शब्द ताज, शब्द रिहा टिकाया। शब्द मंत्री शब्द जोग राज, शब्द रईअत रिहा अखवाया। शब्द रक्खे जगत सांझ, शब्द नाता दए तुड़ाया । शब्द गुर आए लोकमात भाज, शब्द गुर रूप वटाया। शब्द गुर रक्खे लाज, शब्द गुर होए सहाया। नानक सुणाएं नौं खण्ड पृथ्मी इक्क अवाज़, गुर अरजन लेख लिखाया। गुर अरजन मारे इक्क अवाज़, हरि मन्दर दए सुहाया। हरि जू सवारे आपणा काज, गुर अरजन एह समझाया। कलिजुग अन्तम आवे भाज, जोती जामा भेख वटाया। भाग लगाए देस माझ, छे योजन वंड वंडाया। छे शास्त्र खोल्हे पाज, चार वेद फोल फोलाया। कलिजुग रावण गढ़ हँकारी तोड़े जगत समाज, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। सज्जा चरन छुहाए दिली दिलीज, आर पार आप हो जाया। गुरू ग्रन्थ उप्पर बाणी कलिजुग जीवां इक्क नक़ाब, पड़दा इक्क रखाया। अकाल तख्त अकाल मूरत निरगुण सुणाए ना कोई अवाज़ , ढड्ड सारँगे रहे वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अरजन वेखे तेरा दर, हरि मन्दर सोहे साचा घर, गुरू ग्रंथ मिले वर, भेव चुकाए नारी नर, हरि साचा ढाडी दो जहानी बणे गाडी, दूई द्वैती जाए वाढ्ढी, एका दर रखाया। (०७—४६३ ४६४)

* * * * *

हरि का शब्द अट्टल, जगत धुनकार है। हरि का शब्द अट्टल, वसे सच महल्ल दस्से पार किनार है। हरि का शब्द अट्टल, ना कोई देही ना कोई खल्ल, एका रंग अपर अपार है।

हरि का शब्द अट्टल, ना कोई फुल्ल ना कोई फल, चारों कुण्ट पसर पसारया। हरि का शब्द अट्टल, वस्से जल थल, तिन्नां लोआं पावे सारया। हरि का शब्द अट्टल, बेमुख भुलाए कर कर वल छल, गुरमुखां देवे साची धारया। हरि का शब्द अटल, गुरमुख साचे सन्त जनां, वस्से काया सच महल्ल मुनारया। हरि का शब्द अटल, जगत अमोलिआ। हरि शब्द अटल, किसे ना तोलिआ। हरि का शब्द अटल, गुरमुखां परदा साचा खोलिआ। हरि

का शब्द अटल, काया मन्दर साचे बोलिआ। हरि का शब्द अटल, रंग रंगाए काया चोलिआ। हरि का शब्द अटल, गुरमुख साचे सन्त जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना हरि हरि बोलिआ।

हरि का शब्द अटल, जगत वणजारया। हरि शब्द अटल, भगत भंडारया। हरि का शब्द अटल, देवणहार हरि निरंकारया। हरि का शब्द अटल, अनहद धुन सची धुनकारया। हरि का शब्द अट्टल, तोड़े मुन सुन आत्म जोती मेल मिला रिहा। हरि का शब्द अट्टल, ना कोई वरन ना कोई गोती, एका रंग समा रिहा। हरि का शब्द अटल, गुरमुखां उठाए काया सोती, इक्क हलूणा हिला रिहा। हरि का शब्द अटल, लक्ख चुरासी रही रोती, दिस्स किसे ना आ रिहा। हरि का शब्द अट्टल, गुरमुख उपजाए दया कमाए लोकमात साचे मोती, पभ साचा हार गुंदा रिहा। हरि का शब्द अटल, दुरमत मैल जाए धोती, जो जन रसना हरि गुण गा रिहा। हरि शब्द अटल, ना कोई मंगे दान अहूती, अमृत साचा जाम पिआ रिहा। हरि का शब्द अटल, एका नाम जगत भबूती, गुरमुख विरला मस्तक ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच दवारा इक्क खुल्ला रिहा।

हरि का शब्द अटल, धाम असथूलिआ। हरि का शब्द अटल, मिलाए मेल कन्त कन्तूलिआ। हरि शब्द अटल, अठ्ठे पहर दिवस रैण तिन्नां लोआं रक्खे एका झूलिआ। हरि का शब्द अटल, चुकाए लहण देण, जो जन गाए रसना भूलिआ।

हरि शब्द अटल, आप बणे साक सज्जण सैण मात पित भाई भैण, अगला पिछला चुकाए मूलिआ। हरि का शब्द अटल, रसना सके ना किसे कहण, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग जीवां अन्तम भूलिआ। आप वहाए वैहंदे वहण, लाड़ी मौत खाए डैण, घर घर उडदी दिस्से धूलिआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन, सच दवारे लोकमात फल्लया फूलिआ।

हरि का शब्द अटल, जगत सनयास है। हरि का शब्द अट्टल, सर्ब घट वास है। हरि शब्द अटल, होए सहाई गर्भ दस मास है। हरि का शब्द अटल, पवण चलाए रसन सवास है। हरि का शब्द अअल, इक्क वखाए सच मण्डल दी साची रास है। हरि शब्द अटल, गुरमुख साचे सन्त जनां, निज घर आत्म रक्खे वास है। हरि का शब्द अटल, खोल्हे बन्द किवाड़, सदा होया रहे दास है। हरि शब्द अटल, पंजां चोरां चबाए दाड़, साची जोत करे प्रकाश है। हरि का शब्द अटल, जोत जगाए बहत्तर नाड़, वेख वखाणे पृथ्मी अकाश है। हरि का शब्द अटल, आदि अन्त ना जाए विनास है। हरि का शब्द अटल, वस्से धाम इक्क इकल्ल, जन भगतां करे बन्द ख़लास है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत धर, आप आपणा करे साचा वास है।

हरि का शब्द अटल, भगत गिआनया। हरि का शब्द अट्टल, माण गवाए वेद चार अठारां पुरानया। हरि का शब्द अटल, रसना गाए कृष्न भगवानया। हरि शब्द अटल, गीता गाए जगत सुणाए, देवे ब्रह्म गिआनया। हरि का शब्द अटल, वेद बिआसा रिहा सुणाए, साची रसना हरि वखानया। हरि का शब्द अटल, ऊँचो ऊँच इक्क प्रबल, गौतम बुद्धा आत्म सुध्धा, मिल्या माण जगत जहानया। हरि शब्द अटल, आपे वेखे पाणी दुध्धा, अठां तत्तां वक्ख रखानिआं। हरि का शब्द अट्टल, गुरमुख विरले आत्म गुध्धा, तन साचा सुध्धा मिले माण जगत निशानया। हरि का शब्द अटल, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, इक्क उडाए शब्द बिबाणिआ।

हरि का रूप अगम्म, शब्द बिबाण है। हरि का शब्द अगम्म, पुरीआं लोआं इक्क उडान है। हरि का रूप अगम्म, चारे कुण्ट दहि दिशा एका करे ध्यान है। हरि का शब्द अगम्म, साची धुन सची धुनकान है। हरि का रूप अगम्म, जोती जगे बेमुहान है। हरि का शब्द अगम्म, ना दिसे कोई निशान है। हरि का रूप अगम्म, ना सके कोई पछाण है। हरि का शब्द अगम्म, जगत निमाणिआ देवे माण है। हरि का रूप अगम्म, राजे राणिआ बेमुहाणिआ अन्तम आई हान है। हरि का शब्द अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात आप उठाए शाह सुल्तान है।

हरि का शब्द अगम्म, सच दुकान है। हरि का रूप अगम्म, पवण मसाण है। हरि का शब्द अगम्म, ना वस्से किसे मकान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पत्त ना कोई पत्ती, ना कोई दिस्से डाहण है। हरि का रूप अगम्म, दिस ना आए तीर्थ तट्टी, अठसठ रहे ख़ाक छाण है। हरि का रूप अगम्म, किसे हत्थ ना आए रत्ती, वेद पुरानां आई हान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई जाणे जोगी जती, आत्म धीरज होई हैरान है। हरि का शब्द अगम्म, गुरमुखां दे समझावे मती, साचा धर्म विच्च जहान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई नार ना कोई पती, ना कोई दीवा ना कोई बत्ती, आत्म सभ दी होई तत्ती, कलिजुग मारे बली बलवान है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, प्रगट होए विष्नूं भगवान है।

हरि का शब्द अटल, धीर धराइंदा। हरि का शब्द अटल, अमृत आत्म साचा सीर पिलाइंदा। हरि का शब्द अटल, एका तीर्थ साचा सीरथ आत्म इक्क वखाइंदा। हरि का शब्द अटल, ना कोई जाणे शाह सुल्तान पीर फ़कीर, वेद पुरानां हत्थ ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा हरि प्रगटाइंदा।(२६ पोह २०११ बि)

* * * * *

हरिजन शब्द पछाण, नाम अधारया। हरिजन शब्द पछाण, एका सच उडारया। हरिजन शब्द पछाण, तिन्नां लोकां वसे बाहरया। हरिजन शब्द पछाण, साची वक्खर एका अक्खर, नाम निरँजण नर निरंकारया। हरिजन शब्द पछाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे गिरवर गिरधारया।

हरिजन शब्द पछाण, जगत अमोल है। हरिजन शब्द पछाण, अन्तम तुले पूरे तोल है। हरिजन शब्द पछाण, गुरमुख साचे सन्त जन, मिले लाल इक्क अनमुल्लड़ा, रक्खणी वस्त संभाल है। हरिजन शब्द पछाण, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे सच्चा दान है।

हरिजन शब्द पछाण, साची दात है। हरिजन शब्द पछाण, विच लोकमात उत्तम दात है। हरिजन शब्द पछाण, लोकमात वड्डी इक्क करामात है। हरिजन शब्द पछाण, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान है। हरिजन शब्द पछाण, अठ्ठे पहर एका रंग रंगान है। हरिजन शब्द पछाण, नर हरि हरी भगवान, आत्म मिटाए अन्धेरी रैण है।

हरिजन शब्द पछाण, अन्धेरी रैण जगत ढंडोरा। हरिजन शब्द पछाण, अन्तम वेले मौत लाड़ी, अग्गे पिच्छेफेरे घोड़ा। हरिजन शब्द अमोल, किरपा करे सतारां हाढ़ो। हरिजन शब्द अमोल, जोती जोत सरूप हरि, साचा शब्द कन्न सुणाए, गुरमुखां हरि दया कमाए, बेमुखां आत्म अगन लगाए, कलिजुग वक्त रह गिआ थोड़ा।

हरिजन शब्द पछाण, साची बाती पुरख अबिनाशी आप जगाई है। हरिजन शब्द पछाण, साची बाणी सोहँ राणी, दो जहानी अचरज खेल रचाई है। हरिजन शब्द पछाण, धुरदरगाही साचा देवे दान, चरन धूड़ मस्तक देवे आत्म सर कराए इशनान, होए आप सहाई है। हरिजन शब्द पछाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठ्ठे पहर रहे निगहबान है।

हरिजन शब्द पछाण, साची शब्द घनघोर है। हरिजन शब्द पछाण, धुनी धुनकार है। हरिजन शब्द पछाण, अठ्ठे पहर पावे शोर, एका रक्खे आपणी धार है। जन भगतां चुकाए मोर तोर, देवे नाम अपार है। हरि बिन अवर ना दीसे कोई होर, लोकमात ठग्ग चोर यार है। एका चढ़ना शब्द घोड़, रहणा सद असवार है। बेमुखां मारे सिर विच पौड़, उत्ते पाए डाहढा भार है। जन भगतां अन्तम जाए बौहड़, आपे होए सहार है। वेखे परखे परख पछाणे मित्रे कौड़, रसना फिके शब्द कटार है। पढ़न पुरान विचारन वेद वखानण, लभ्भदे फिरन ब्रह्मण गौड़, ना जानण हरि भगवान है। जोती जोत सरूप हरि, अन्तम अन्त लक्ख चुरासी लए वर, धर्म राए तेरा दर दवार एका वार दए भर, लोकमात हरि आया दौड़ है।

(१८ हाढ़े २०११ बिक्रमी)

* * * * *

हरि शब्द गुर धार। गुर शब्द जगत पसार। हरि शब्द ब्रह्म विचार। गुर शब्द जगत अधार। हरि शब्द अन्ध अन्धयार। गुर शब्द अंदर बाहर। हरि शब्द नूर उजिआर। गुर शब्द मात पसार। हरि शब्द रंग अपार। गुरमुख गुर शब्द संग प्यार। हरि शब्द गुर शब्द गुरमुख विरले करन विचार।

हरि शब्द गुर अघारया। गुर शब्द विच संसारया। हरि शब्द अगम्म वेख वेख ना किसे विचारया। गुर शब्द लोकमाती गगनी थम्म, रसना रस उपा रिहा। हरि शब्द ना जाए मर, साची धुन धुनी धुनकारया। गुर शब्द काया भन्ने घड़े, करे वेस वारो वारया। हरि शब्द गुर शब्द विरले मात विचारया।

हरि शब्द गुर जणाईआ। गुर शब्द जगत वडयाईआ। हरि शब्द ना किसे लेख लिखाईआ। गुर शब्द लोकमाती हुक्म चलाईआ। हरि शब्द गुणवन्त गुण निधान हरि भगवन, आपे आप रिहा उपाईआ। गुर शब्द सरगुण साचा साचा रूप, कथ कथ जीव जंत रिहा समझाईआ। हरि का शब्द गुर का शब्द गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ।

हरि शब्द अडोल, काया चोलिआ। गुर का शब्द अमोल, रसना बोलिआ। हरि का शब्द काया मन्दर साचे अंदर, गुर पूरे मात फरोलिआ। गुर का शब्द लोकमाती कलिजुग जीवां हो हो नीवां तोल तोलिआ। हरि का शब्द गुर पूरे हाजर हज़ूरे, आत्म सुणिआ सच ढोलिआ। गुर का शब्द अपार साची तूरे, लोकमात गुरमुखां आत्म पड़दा खोल्लया। हरि शब्द गुर शब्द गुरमुख साचे सन्त प्यारे, हरि भगत नाम वणजारे, आत्म साची कोलिआ ।

हरि शब्द जगत गुर नयाउँ है। गुर शब्द वस्से थाउँ थाउँ है। हरि शब्द गुर पूरे रक्खी ठंडी छाउँ है। गुर शब्द लोकमात पिता माउँ है। हरि शब्द ना कोई वेखे ना कोई जाणे, ना कोई दस्से नाउँ है। गुर शब्द लोकमात राग छतीसा, वंडे कर कर नयाउँ है। हरि शब्द गुर शब्द गुरमुख साचा सन्त प्यारा, हरिजन साचा भगत उजिआरा, जाणे निहचल थाउँ है।

हरि शब्द गुर गुर दात। गुर गुर शब्द जगत करामात । हरि शब्द काया रैण अन्धेरी डूंघी कंदर खोल्हे ताक। गुर शब्द गुर रसनी गाए, जगत जणाए भविक्खत वाक। हरि शब्द हरि घर वसेरा, ना कोई रक्खे दूजी आस। गुर शब्द लोकमात करे निबेड़ा, चल्ले स्वास स्वास। हरि शब्द गुर शब्द निरगुण सरगुण दोहां बणाए साची रास। हरि शब्द सुणे पुकार। हरि शब्द गुर अधार। घर घर वेखे नेत्र पेखे, इक्को सच्चा इक्क विचार। धुरदरगाही लिखी रेखे, आपे लिखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत धार। (२६ पोह २०११ बिक्रमी)

* * * * *

हरि शब्द अटल, गुरमुख विरले जाणिआ। हरि शब्द अमोघ, किसे हत्थ ना आए राजे राणिआ। हरि शब्द अमोघ, गुरमुख साचे दर घर साचे एका एक वखाणिआ। हरि दरस अमोघ, जोती देवे नाम, जोती जोत सरूप हरि, आपे आपणे चले भाणिआ।

हरि दरस अमोघ, गुर दर दवारया। हउमे कट्टे माया रोग, देवे नाम अटल अपारया। मिलाए मेल धुर संजोग, साचा दीपक जोत जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, गुरमुख साचे बणत बणा रिहा।

हरि दरस अमोघ जगत वणजारड़ा। हरि दरस अमोघ, हरि वस्से धाम नयारड़ा। हरि दरस अमोघ, गुरमुखां पूर कराए काम, मिले मीत मुरारड़ा। हरि दरस अमोघ, कोई ना मंगे दाम, चरन प्रीती साची नीती एका राह अपारड़ा। हरि दरस अमोघ, मानस देही जाए जीती, मिल्या कन्त सुहागढ़ा। हरि दरस अमोघ, जोती जोत सरूप हरि, एका रंगण नाम रंगाए लाल गुलालड़ा।

काया रंगण रंग गुलाल। गुरमुख दर एका मंगण, आत्म जोती साचा लाल। आपे कट्टे भुक्ख नंगण, साची देवे वस्त संभाल। आप सुहाए आपणे अञ्जण, दो जहानी करे प्रितपाल । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी चल्ले चाल।

हरि दरस अमोघ, जगत दीवानया। आत्म रस सच्चा जोग, सुख सहजे सहज समानया । मिले मेल लिखया धुर संजोग, नर हरि श्री भगवानया। आत्म कट्टे हउमे रोग, शब्द मारे तीर निशान्या। नेड़ ना आए पंचम तत्तां काम क्रोध, प्रभ आत्म देवे सोध, साचा शब्द ब्रह्म गिआनया। हरि हरि शब्द वड्ड जोधन जोध, वड्ड सूरा सूरबीर बलवानया। धुर फ़रमाणा श्री भगवाना एका शब्द अगाध बोध, लोकमात सच्चा निशानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा आपे जाणिआ। (३ माघ २०११ बिक्रमी)

* * * * *

हरि शब्द अपार, ब्रह्मण्ड सहारया। हरि शब्द अपार, वरभंड जैकारया। हरि शब्द अपार, आप चलाए नव खण्ड, एका एक सच्ची धारया। हरि शब्द अपार, पुरियां लोआं रिहा वंड, आपे आप बणत बणा रिहा। हरि शब्द अपार, इक्क रखाए चंड प्रचंड, साचा खेल रचा रिहा। हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी देवे दंड, हरि आपणे हत्थ रखा रिहा। हरि शब्द अपार, गुरमुखां रिहा वंड, गुणवन्ता गुण विचारया। हरि शब्द अपार, बेमुखां वढ्ढे कंड, तिक्खी रक्खे धारया। हरि शब्द अपार, गुरमुखां पाए ठंड, अमृत देवे ठंडा ठारया। हरि शब्द अपार, बेमुखां आत्म होई रंड, भुल्ले जीव गवारया। हरि शब्द अपार, गुरमुखां पाए ठंड, गुरमुख विरला आत्म बन्ने साची गंढु, धुरदरगाही वस्त अपारया। हरि शब्द हरि आपे दे वंड, लक्ख चुरासी सुणा रिहा। हरि शब्द अपार, वड ख़ज़ान्या। हरि शब्द

अपार, मिलाए मेल हरि बीने दान्या। हरि शब्द अपार, एका घर रहाए उपजाए लक्ख चुरासी कन्न सुणानया। हरि शब्द अपार, तिक्खी रक्खे हरि जी धार, काया मन्दर साचे अंदर, आप वखाए सच टिकाणिआ। (५ माघ २०११ बिक्रमी)

* * * * *

हरि शब्द अपार, जगत चलाईआ। हरि शब्द अपार, गुरूआं पीरां साधां सन्तां, आत्म वज्जी इक्क वधाईआ। हरि शब्द अपार, एका एक सच्चा तीरा, बज़र कपाटी चीर वखाईआ। हरि शब्द अपार, अमृत आत्म कढ़ु बाहर, ठंडी धार इक्क वहाईआ। गुरमुखां आत्म कढ़ु हउमे पीड़ा, एका धार बंधाईआ। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अंक एका डंक, राओ रंक रखाईआ।

हरि शब्द अपार, खेल निरालीआ। जन भगतां कराए मेल वाली दो जहानिआं। हरि शब्द अपार, गुरमुख साचे सन्त जन आत्म पाए सार, सुरत संभालीआ। हरि शब्द अपार, धर्म राए दी कट्टे जेल़ु, देवे नाम इक्क बिबाणिआ। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात मार झात, देवे इक्क सुगात सची निशानीआं।

हरि शब्द अपार, सदा अडोलिआ। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले मात बोलिआ। हरि शब्द अपार, गुर प्रसादि साध सन्त, पूरा किसे ना तोलिआ। हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी भुल्ले जीव जंत, आत्म पड़दा किसे ना खोल्लया। हरि शब्द अपारा मेल मिलावा साचे कन्त, हरि शब्द अपार, गुरमुख विरला जाणे सन्त, आत्म कुण्डा जिस ने खोल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अंदर आपे बोलिआ।

हरि शब्द अपार, जगत धुनकाईआ। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। हरि शब्द अपार, एका दूजा भउ चुकाईआ। हरि शब्द अपार, घर साचे वज्जे वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर सुहाईआ।

हरि शब्द अपार, सदा जैकारया। हरि शब्द अपार, एका घर साचे दर सदा सदा पसारया। हरि शब्द अपार, विरले मिलाए मेल कन्त भतारया। हरि शब्द अपार, काया सीतल ठंडी धार, करे ठंडा ठारया। हरि शब्द अपार, साचे मन्दर जाए वड़ु, एका जोती अगम्म अपारया। पुरख अबिनाशी अग्गे खड़ु, आप फड़ाए आपणे लड़, इक्क बहाए सच दवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां चुकाए जम का डर, आदि अन्त एका एक आवे जावे वारो वारया।

वारो वार आए संसार। सृष्ट सबाई बन्नै धार। गुरमुखां देवे नाम अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां एका सरना धरनी धरना कलिजुग तेरी अन्तम वार।

हरि शब्द अपार, वड वड्डिआइआ। हरि शब्द अपार, खेल करतारया। हरि शब्द अपार, जन भगतां कराए मेल विच्च संसारया। हरि शब्द अपार, लोकमात रखावे उपजावे वारो वारया। हरि शब्द अपार, एका डंक राओ रंक अठारां वरनां एका सरना आपे आप रखा रिहा। हरि शब्द अपार, गुरमुखां लाए आत्म तनका, खिच्च लिआए चरन दवार। हरि शब्द अपार, सन्त सुहेले तारे जिउँ भगत जनका, आत्म पड़दे देवे पाड़। हरि शब्द अपार, पतित पापी जाए तार जिउँ तारी गनका, रसना गाए हरि निरँकार। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात जपाए आदि अन्त वारो वार।

हरि शब्द अपार, हरि खीनया। हरि शब्द अपार, वड वड दाना बीनया। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले रसना चीनया। हरि शब्द अपार, तन मन काया ठंडा करे सीनया। हरि शब्द अपार, अमृत सिंच काया कराए ठंडी ठार, हरि शब्द अपार, खोल्हे बन्द कवाड़, तत्ती वा ना लग्गे हाढ़े, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त दुलारे, आपे परखे चंगे माड़े, सच सच सच नगीनया।

हरि शब्द अपार, वथ रघुराईआ। हरि शब्द अपार, सर्ब कला समरथ, मातलोक सदा एका वस्त टिकाईआ। हरि शब्द अपार, गुरमुखां देवे वथ, सिर रक्खे दे कर हत्थ, आत्म भेव गूझ खुल्हाईआ। हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी पाई नत्थ, चारों कुण्ट फिरन वाहो दाहीआ। हरि शब्द अपार, पंजां चोरां जाए मथ, इक्क चढ़ाए शब्द रथ, लोआं पुरीआं पार कराईआ। हरि शब्द अपार, जन भगतां देवे नाम वथ, शब्द गैहणा लोकमात लैणा, हरिजन सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी साचा सैणा, दरस दिखाए तीजे नैणा, सन्त सुहेले मिल मिल बहिणा, अचरज रीत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, दुरमत मैल तन रिहा धोत, हरिजन रहे सरनाईआ।

हरि सन्त अपार, सति सरूपिआ। हरि सन्त अपार, करे प्रकाश अन्ध अन्ध कूपिआ। हरि सन्त अपार, जगत बंधाए धार, फड़ उठाए वड्ड वड्ड शाहो भूपिआ। हरि सन्त अपार, मिल्या मेल कन्त भतार, वसे सच महल्ल उच्च मुनार, रंग माणे हरि भगवान, ना कोई जाणे रेख रूपिआ। हरि सन्त अपार, जीव जंत वखाणे सच इक्क टिकाणिआ। हरि सन्त अपार, कुलवन्त सोभावन्त सुहागी नार, जोती जोत सरूप हरि, इक्क बिठाए दया कमाए, साचे शब्द बिबाणिआ। (११ माघ २०११ बिक्रमी)

* * * * *

हरि शब्द अथाह बेपरवाहीआ। गुर शब्द जगत मलाह, भेव ना राईआ। होए सहाई सभनी थां, एका धार आप वहाईआ। ना कोई जाणे पिता मां, पुत्तर धीआं ना कोई जणाईआ। गुरमुखां रक्खे ठंडी छाँ, दिवस रैण अमृत धार पिआईआ। अमृत दर दवारा साचे थां, बजर कपाटी पाड़ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती शब्द मेल कर, भगत भगवन्त सन्त असन्त जीव जंत बाहर रखाईआ।

हरि शब्द अलक्ख, अलक्खना लखिआ। गुर का शब्द प्रतक्ख, गुरमुख साचे रसना चक्खया । वेले लए रक्ख, देवे सिर समरथ्थया। पंचम चोरां पाए नत्थ, अंदरे अंदर आपे आप मथ्थया। पुरख अबिनाशी महिंमा अकथ्थ, कथनी कथ ना किसे कथिआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जोती शब्द मेल हरि, जगत चलाए एका रथिआ।

हरि शब्द अपार गुरदवारया। गुर शब्द अपार, जगत अधारया। गुरमुख उधरे पार, जिस रसना नाउँ उच्चारया। जुगा जुगन्तर साची कार, आदि अन्त ना पारावारया। आपे बंने आपणी धार, ना कोई मंगे होर सहारया। आपे पुरख आपे नार, आपे जोती शब्द अद्धार, आपे पवण सवासी होई उडारया। (१२ भादरों २०१२ बिक्रमी)

* * * * *

इक्को जपणा धुर दा नाम, नाम निधाना इक्क समझाईआ। पूरन होवण सगले काम, निहकर्मी कर्म कमाईआ । भाग लग्गे नगर खेड़ा काया ग्राम, साढ़ु तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। अमृत आत्म पीणा जाम, निझर झिरना रस झिराईआ । जोत प्रकाश करना भान, अन्ध अन्धेरा अन्ध मिटाईआ। सतिगुर शब्द सुणना ज्ञान, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। इक्को ब्रह्म होवे ध्यान, पारब्रह्म नज़री आईआ। सोहणा मन्दर सोहे मकान, काया माटी रंग रंगाईआ। जिथ्थे पुरख अकाला दीन दयाला करे किआम, सच सिँघासण डेरा लाईआ ठाकर स्वामी मिलणा होवे असान, अहिसान सिर ना कोई चढ़ाईआ। जन भगतो कोट जन्म भावें लाउँदे रहे दीवान, बिना प्रभ दरस लेखा मात ना कोई मुकाईआ। हरि के नाम पिच्छे भावें हो जाउ बदनाम, बदी नेकी आपणा रूप दए बदलाईआ। तुहाढ़ु अंदर रहे ना अन्धेरी शाम, सति सच चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग इक्को रिहा दिसाईआ। (१८ माघ सै सं)

* * * * *
* * * * *